CRITERION-I

EVIDENCE(S), AS PER SOP

METRIC No. 1.3.4	Percentage of students undertaking field projects/ research projects/ internships (Data for the latest completed academic year)
• Internship completion certificate/ project work completion certificate and Report of the field visit/ sample photographs of the field visit/ permission letter from the competent authority for the year 2020-21 of the desired candidates	

2021

मदकू द्वीप का पुरातात्विक सर्वेक्षण

एम ए द्वितीय सेमेस्टर के तृतीय प्रश्न पत्र हेतु प्रस्तुत सर्वेक्षण रिपोर्ट

(डॉ दिनेश नंदिनी परिहार)
विभागाध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्व
अध्ययनशाला

HEAD
Ancient Indian History Culture
& Archaeology
Pt. Ravishankar Shukla University
RAIPUR (C.G.)

प्रदीप कुमार
एम ए द्वितीय सेमेस्टर
प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्व
अध्ययनशाला

प्रदीप कुमार
पं रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर (छ. ग)

7/24/2021

निस्कर्ष एवं उपसंहार

मदकू द्वीप का जब उत्खनन प्रारंभ हुआ उस समय वह बिलासपुर जिले के अंतर्गत स्थित था। 1 जनवरी 2012 को छत्तीसगढ़ के पुराने जिलों के भौगोलिक विभाजन से नौ नवीन जिलों के गठन के पश्चात् अब इसकी स्थिति मुंगेली जिले के अंतर्गत है। अतः इसे मुंगेली जिले का प्रथम उत्खनित पुरास्थल भी कहा जा सकता है। शिवनाथ की जल धाराओं से घिरा यह द्वीप खण्ड, भौगोलिक दृष्टि से महानदी –शिवनाथ बेसिन (छत्तीसगढ़ के मुख्य मैदानी भाग) में स्थित है।

भारत के प्राचीन धर्म ग्रंथों में उत्तर-पूर्व वाहिनी नदियों को सर्वाधिक पवित्र माना गया है। यही कारण है कि ऐसी नदियों के किनारे प्राचीन काल से ही धर्म और अध्यात्म के प्रतिनिधि केंद्र विकसित होते रहे हैं।। वाराणसी और सिरपुर इस संदर्भ में उदाहरण के रूप में गिनाए जा सकते हैं।। इन दोनों ही स्थानों पर क्रमशः गंगा और महानदी उत्तर पूर्व वाहिनी है और यही कारण है कि इन स्थानों पर प्राचीन धर्मों के कला और स्थापत्य केंद्रों की प्रभुत उन्नति हुई। यही विशेषता ' मदकू द्वीप ' में भी देखी जा सकती है। इस स्थान पर, दक्षिण से उत्तर की ओर बहने वाली शिवनाथ नदी की जलधारा दो भागों में विभक्त होने और उनके पुनः समागम के पश्चात उत्तर पूर्व की ओर मुड़ जाती है।

यह तथ्य इस स्थान के धार्मिक महत्व में वृद्धि करता है और अत्यंत सीमित क्षेत्र में उत्खनन से प्राप्त सघनता पूर्वक निर्मित मंदिरों का समूह उसका सबसे बड़ा प्रमाण है। इस पुरास्थल से 3 सदी ईस्वी के दो शिलालेख प्रतिवेदित हैं। जिनमें से एक में ' अक्षयनिधि ' का उल्लेख मिलता है। धूमनाथ – महात्म्य में भी मदकू द्वीप में ' ' संपत्ति से युक्त दो मंदिरों ' के होने का विवरण मिलता है जिनमें विष्णु और शिव की मूर्तियां थी जो कालान्तर में गिर गई और इसलिए यह हरिहर– क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

स्थानीय जन मानस में मदकू द्वीप को ' केदार द्वीप ' और ' हरिहर– क्षेत्र ' के रूप में मान्यता प्राप्त है। उत्खनन से उपलब्ध पुरातत्वीय प्रमाणों के आधार पर इसे ' केदार द्वीप ' मानने संबंधी अवधारणा की कोई तर्कसंगत व्याख्या नहीं की जा सकती है, परंतु हरिहर क्षेत्र के विषय में कुछ विचार अवश्य किया जा सकता है

क्योंकि उत्खनन से विष्णु (गरुड़ारुढ़ लक्ष्मी – नारायण और कृष्ण) और शिव (लिंग, उमा –महेश्वर, भैरव) के विविध रूपों की आराधना प्रस्तर प्रतिमाएं और मंदिराविशेष प्राप्त हुए हैं।

यद्यपि, यहां से हरिहर की स्वतंत्र प्रतिमा अद्यतन प्रकाश में नहीं आई है, तथापि एक ही सामान्य जगती पर निर्मित शिव और विष्णु के मंदिरों और उनके गर्भगृह से तत्संबंधी मूर्तियों की उपलब्धता से इस

भावना को बल मिलता है कि यहां वैष्णव और शैव सम्प्रदाय के लोग सौहाद्रतापूर्वक परस्पर आस्था का विकास कर रहे थे।

स्मार्तलिंग का बहुतायत में पाया जाना भी यह इंगित करता है कि यहां स्मार्त पूजा अथवा पांचोपासना पद्धति प्रचलन में थी। स्मार्त के समन्वयवादी दृष्टिकोण के कारण साम्प्रदायिक सोहार्द्र व सहनशीलता की भावना विकसित हुई। इसी विचारधारा से प्रेरित होकर ब्रह्माण्ड धर्म में विभिन्न पौराणिक देवताओं की उपासना की परम्परा रही है।

इस उदारवादी प्रवृत्ति के कारण ही पंचोपासना, पंचदेवोपासना, पंचायतन पूजा अथवा स्मार्त पूजा का विकास हुआ।

...काल में अद्‌भुत स्मार्त पूजा का व्यापक प्रचार-प्रसार परवर्ती काल में ही हो पाया। इस पूजा पद्धति का उद्देश्य तत्कालीन समाज में व्याप्त साम्प्रदायिक मतभेदों को समाप्त कर समस्त ब्रह्माण्ड धर्मावलम्बियों को ...ता के सूत्र में पिरोना तथा एक श्रेष्ठ भारतीय समाज का निर्माण करना था।

कालान्तर में आदि शंकराचार्य और कुमारिलभट्ट ने बौद्ध धर्म के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए, ब्रह्माण्ड धर्मावलम्बियों के मध्य विद्यामान साम्प्रदायिक कटुता मिटाकर उन्हें संगठित करने हेतु स्मार्त पूजा का व्यापक प्रचार – प्रसार किया। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में कलचुरी शासकों का उद्देश्य स्मार्त पूजा के द्वारा हिंदू समाज में व्याप्त साम्प्रदायिक संकिर्णताओं एवं जातिगत विषमताओं का निराकरण करना तथा प्रजा को संगठित कर उनमें राष्ट्रीयता की भावना विकसित करना था।

भारतीय कला में समाज के कल्याण और मंगल की भावना सन्निहित है। स्मार्तलिंग इसी भावना के वाहक हैं।

...वी देव प्रथम के आमोदा ताम्रपत्र में, उसके द्वारा तुम्माण में अपने पिता के द्वारा बनवाए गए वंकेश्वर मंदिर में 'चतुष्किका' की प्रतिष्ठा कराने और इस अवसर पर ग्राम दान करने का उल्लेख मिलता है।

चतुष्किका का शाब्दिक अर्थ ' चतुष्पदी ' अथवा चार पायों वाली चौकी है। स्मार्त लिंगो में चारों कोनें में चार पाए होते हैं।। इसलिए स्मार्त लिंग को उक्त लेख में वर्णित चतुष्किका से समीकृत किया जाना समीचीन प्रतीत होता है।

तुमान (जिला कोरब) की भांति मदकू द्वीप से भी प्राप्त सभी स्मार्त लिंगो में पांच पिण्डों का अंकन मिलता है।

इनकी एक प्रमुख विशेषता यह है कि इन के चारों कोनों पर शिवलिंग जैसी संरचना निर्मित की गई है जिन पर वलयाकार सर्प लिपटे हुए हैं।। डॉ. एस.एन . यादव और श्री अतुल कुमार प्रधान ने तुमान (जिला–कोरबा) के अनुविक्षण से प्राप्त स्मार्त लिंगो के आधार पर यह सही अनुमान लगाया है कि कलचुरी शासक आदि शंकराचार्य के वेदान्त और एकेश्वरवाद मत से प्रभावित थे। मदकू द्वीप से बड़ी संख्या में इनका प्राप्त होना यह भी संकेत देता है कि ये शंकराचार्य के मत से ना केवल प्रभावित थे वरन् उसके पोषक भी थे। मदकू द्वीप से प्राप्त स्मार्तलिंगो का निर्माण कलचुरी शासकों अथवा उनके अधीनस्थ सामन्तो, अधिकारियों और संभवतः धर्म परायण प्रजा के द्वारा 11 वीं से 15 वीं सदी ईसवी के मध्य कराया गया था। अन्य

पूरास्थलों से प्राप्त स्मार्त लिंगो का निर्माण या तो कलचुरी व चंदेल अथवा शंकराचार्य के मतानुयायी नरेशों द्वारा अथवा उनके अधीनस्थ कर्मचारी या प्रजा के द्वारा कराया गया था।
महानदी की तरह सम्भवतः शिवनाथ भी प्राचीन काल में व्यापारिक यात्रा पथ का निर्माण करती थी। सिरपुर के उत्खनन से महानदी के द्वारा सामुद्रिक व्यापार होने के प्रमाण मिले हैं।
शिवनाथ, महानदी की प्रमुख सहायक नदी होने के नाते प्राचीन काल में व्यापार और वाणिज्य में उसकी सहभागी अवश्य रही होगी। शिवरीनारायण (जिला– जांजगीर-चांपा) के निकट शिवनाथ और महानदी का संगम है। उक्त नदियों के तटवर्ती ग्रामों में निषादों की बहुलता से भी इस तथ्य को बल मिलता है क्योंकि वे कुशल मल्लाह होते हैं।।
ईट के छोटे-छोटे टुकड़े, बजरी और मिट्टी के साथ चूने का प्रयोग कर फर्श का निर्माण किया गया था जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कलचुरी काल में नागरिक जीवन सुव्यवस्थित था।
एक ही पंक्ति में निर्मित द्वितीय एवं तृतीय समूह के मंदिरों (क्र.1 से 18 तक) का निर्माण यद्यपि भिन्न-भिन्न कालों में हुआ, तथापि उसके निर्माण में सर्वांगीण रूप से व्यवस्थित नियोजन दृष्टिगोचर होता है।
मध्यवर्ती मंदिरों (क्र. 6 से लेकर 1 तक) के गर्भगृह आकार में, उत्तर और दक्षिण में स्थित मंदिरों के गर्भगृह से अपेक्षाकृत बड़े हैं। इस आधार पर इसमें कोई संशय नहीं कि मध्यवर्ती मंदिरों की ऊंचाई भी पार्श्ववर्ती मंदिरों की अपेक्षा अधिक रही होगी।

इससे यह सहज ही बोधगम्य है कि अपने वैभव काल में इन मंदिरों के शिखरों की ऊंचाई पहले आरोही तत्पश्चात् अवरोही क्रम में रही होंगी। इस प्रकार मदकू द्वीप में मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला के प्रमाण, लगभग 500 वर्ष के (10 वीं सदी ईस्वी से प्रारंभ होकर 15 वीं सदी ईस्वी तक) मिलते हैं।। इन मंदिरों के शिखर ड़मरु (जिला- बलोदा बाजार) के शिव मंदिर के समान शंक्वाकार हैं। जो नागर शैली के हैं। ।
ऐसे शिखरों का घेरा ऊंचाई के साथ - साथ उत्तरोत्तर न्यून होता जाता है।
मदकू द्वीप में थोड़े काल व्यवधान के साथ प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक युग तक मानव गतिविधियों के प्रमाण उपलब्ध हैं।
मुख्य रूप से यहां से पूर्व में प्रतिवेदित तीसरी सदी ईस्वी के शिलालेखों और वर्तमान उत्खनन से प्राप्त 10 वीं सदी ईस्वी और उसके पश्चात्वर्ती कालों के मध्य की अवधि अभी भी तिमिराछन्न है।
इस द्वीप के आसपास स्थित ग्राम यथा मदकू, बडियाडीह और अकोली में प्राचीन बस्ती के चिह्न विद्यमान है। भविष्य में इन स्थलों के उत्खनन से सम्भवतः यह रिक्तता पूर्ण की जा सकेगी।
अभिलेखिय साक्ष्यों द्वितीय जाजल्लदेव के शिवरीनारायण अभिलेख सवंत् 919) से ज्ञात होता है यह प्रतिमा राधा कृष्ण मंदिर के सामने स्थित चबूतरे पर रखी हुई है।
यह प्रतिमा राधा कृष्ण मंदिर के सामने स्थित चबूतरे पर रखी हुई है। कि कलचुरी काल में सती प्रथा का प्रचलन था यह प्रतिमा राधा कृष्ण मंदिर के सामने स्थित चबूतरे पर रखी हुई है।
यह प्रतिमा राधा कृष्ण मंदिर के सामने स्थित चबूतरे पर रखी हुई है किंतु इस प्रथा का पालन स्त्रियों के लिए अनिवार्य नहीं था। मदकू द्वीप के उत्खनन से दो ऐसे प्रमाण मिले हैं।

मसे इस क्षेत्र में तत्कालीन युग में इस प्रथा के जीवित होने के संकेत मिलते हैं।। उपासक राजपुरुष की
निमाओं के साथ उनकी रानियों का प्रदर्शन उस काल में स्त्रियों के प्रतिष्ठित पद का घोतक है। वे धार्मिक
सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर रुचि लेती थी।

न धातु निर्मित पुरावस्तुओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कलचुरी काल में धातु उद्योग
म्परागत रूप से विकसित था। आभूषण तैयार करने में लोहे के अतिरिक्त कांस्य व ताम्र धातु का भी
योग किया जाता था। उपलब्ध मूर्तिकला के विविध उदाहरणों के अध्ययन व अभिलेखों के अंर्त साक्ष्यों
ज्ञात होता है।
आभूषण बनाने में सोना, चांदी एवं बहुमूल्य पत्थरों का भी उपयोग किया जाता था। सोना, चांदी व
वा धातु का प्रयोग सिक्कों के निर्माण में भी किया जाता था। कलचुरी लेखों में लोहे की खान व लोहारों
उल्लेख यह इंगित करता है कि धातु कर्म उद्योग विकसित अवस्था में था।
दकू द्वीप के पश्चिम और उत्तर में स्थित ग्रामों क्रमशः मदकू और बडियाडीह के सतह पर विद्यमान
त्पात्र के प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निकटवर्ती ग्रामों में कलचुरी काल के पूर्व भी
साहट थी किंतु इस द्वीप को विशेष महत्व और संरक्षण कलचुरी शासकों के काल में प्राप्त हुआ।
दकू और बडियाडीह ग्राम प्राचीन टीलों पर बसे हुए हैं।
डियाडीह के प्राचीन बसाहट युक्त अधिकांश टीले अब खेतों में बदल चुके हैं। । इन खेतों में हल चलाने के
गान आज भी कलचुरी और उनके पूर्ववर्ती पाण्डूवंशी काल के मृदभाण्ड प्राप्त होते हैं।
म्भावना है कि प्राचीन बसाहट युक्त इन स्थलों के उत्खनन से और भी प्राचीन काल के बसाहट के प्रमाण
काश में आ सकते हैं।

हां से प्राप्त प्रागैतिहासिक प्रस्तर उपकरणों, मदकू द्वीप से माण्डूक्य ऋषि की सम्बद्धता को पुष्ट करने, 3
दी ईस्वी के शिलालेखों और कलचुरी युगीन मंदिरों के मध्य कालक्रम की रिक्तता को भरने और
न्तरता को ज्ञात करने के लिए आस -पास स्थित प्राचीन बसाहट युक्त क्षेत्र का उत्खनन आवश्यक है।
के, विभिन्न कालों का व्यवस्थित और प्रमाणिक सांस्कृतिक अनुक्रम ज्ञात किया जा सके।
दकू द्वीप के निकटवर्ती क्षेत्रों के सर्वेक्षण से प्राप्त प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस क्षेत्र में सुदूर
ोत से ही सभ्यता का विकास हो चुका था।
हार, जो यहां से मात्र 65 कि.मी. दूरी स्थित है वहां पर उत्खनन से आद्य ऐतिहासिक काल से
ध्यकाल तक के पुरातत्वीय प्रमाण मिले हैं। मात्र 13 कि.मी. दूर उत्तर पूर्व में, मनियारी नदी के तट पर
स्थित' तालाग्राम ' से शरभपुरीय काल (4 थी- 5 वी सदी ईस्वी) के मंदिर स्थापत्य के अवशेष ज्ञात है।
नी ही दूरी पर पश्चिम दिशा में 36 गढ़ों में से एक ' मारो गढ़ ' स्थित हैं। । सर्वेक्षण से इस द्वीप के
श्चिम और उत्तर- पश्चिम में स्थित ग्रामों क्रमशः मदकू और बडियाडीह में प्राचीन बस्ती के प्रमाण स्वरूप
ीकरे प्राप्त हुए हैं। वहीं पूर्व और दक्षिण - पूर्व में स्थित ग्रामों क्रमशः अकोली और परसवानी में प्राचीन

मंदिरों के स्थापत्य अवशेष विद्यमान हैं।

उनके स्थापत्य खण्डों पर उत्कीर्ण अभिकल्प, मदकू द्वीप के उत्खनित मंदिरों के स्थापत्य खण्डों से समानता प्रदर्शित करते हैं।

मदकू द्वीप के उत्खनन से, सामान्यतः छत्तीसगढ़ के मध्ययुगीन और विशेषतः कलचुरी युगीन मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला का स्वरूप उद्घाटित हुआ है। छत्तीसगढ़ में यह कलचुरी और परवर्ती कलचुरी युग के सांस्कृतिक चरण को उद्घाटित करने वाला महत्वपूर्ण उत्खनित पूरास्थल है।

चित्रफलक 9

मंदिर के गर्भगृह में स्थापित स्मार्त लिंग

स्थापत्य खंड-गणपति प्रतिमा युक्त धरण पट्ट

मल्हार

स्थल सर्वेक्षण रिपोर्ट

एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व

सत्र 2020-21

(डॉ. दिनेश नंदिनी परिहार)
विभागाध्यक्ष
प्रा.भा.इति.सं.एवं पुरातत्व
अध्यायनशाला
पं. रवि.श.शु.विवि. रायपुर (छ.ग.)

HEAD
Ancient Indian History Culture
& Archaeology
Pt. Ravishankar Shukla University
RAIPUR (C.G.)

राहुल शर्मा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर
प्रा.भा.इति.सं.एवं पुरातत्व
अध्यायनशाला
पं. रवि.श.शु.विवि. रायपुर (छ.ग.)

पं.रविशंकर शुक्ल विवि रायपुर (छ.ग.)

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरणों से यह निष्कर्ष निकलता है की मल्हार प्राचीन काल से ही धार्मिक, राजनैतिक व व्यापारिक केंद्र रहा है | यह विभिन्न राजवंशों के शासन में भी महत्वपूर्ण राजनैतिक स्थल के रुप में विकसित होता रहा था | यह शैव, वैष्णव, बौद्ध व जैन संप्रदाय का प्रमुख केंद्र था | उत्तर भारत को दक्षिण-पूर्वी समुद्र तट से जोडेने वाले मार्गों के बीच में होने के कारण यह एक व्यापारिक केंद्र भी रहा | मल्हार में प्राप्त ईसा पूर्व शताब्दी से लेकर मध्यकाल तक के अलग अलग कालों के प्राचीन कलावशेषों, मुद्राओं, सिक्कों व अभिलेखों के कारण यह छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख पुरातात्विक स्थल हैं | यहाँ से प्राप्त पुरातात्विक साधनों के माध्यम से हमें छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास को जानने में सहायता मिलती हैं |

छायाचित्र

1. देउर मंदिर

2. जलहरि

रतनपुर

स्थल सर्वेक्षण रिपोर्ट

एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व

सत्र 2020-21

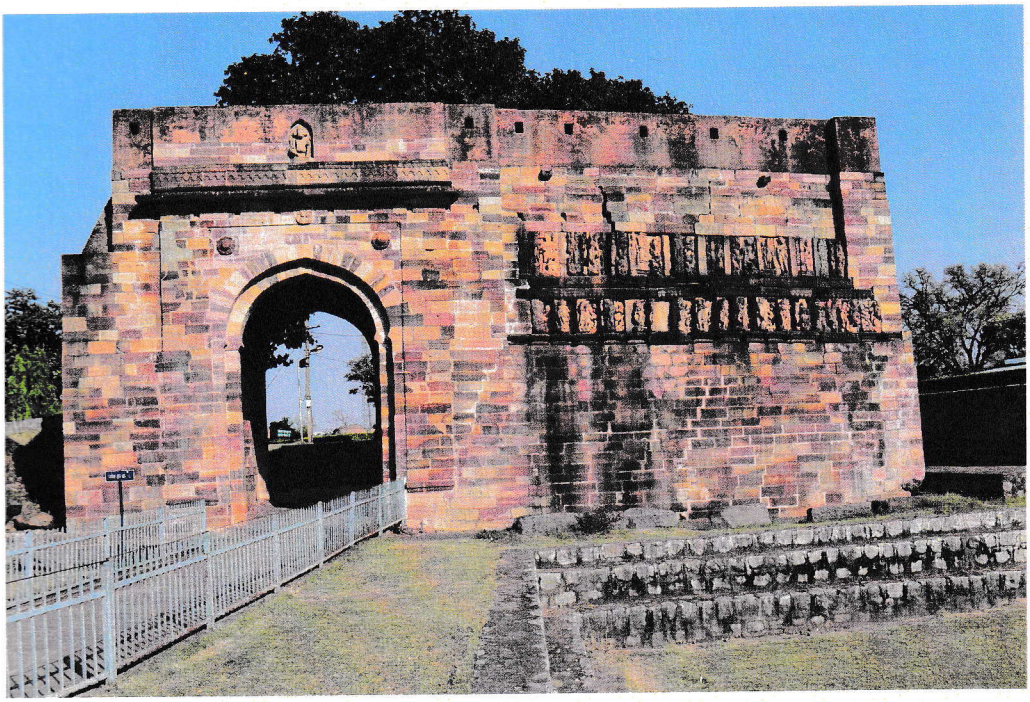

(डॉ. दिनेश नंदिनी परिहार)

विभागाध्यक्ष

प्रा.भा.इति.सं.एवं पुरातत्व

पुरातत्व

अध्ययनशाला

पं. रवि.श.शु.विवि. रायपुर(छ.ग.)

HEAD
Ancient Indian History Culture
& Archaeology
Pt. Ravishankar Shukla University
RAIPUR (C.G.)

सुप्रिया चंद्राकर

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर

प्रा.भा.इति.सं.एवं

अध्ययनशाला

पं. रवि.श.शु.विवि. रायपुर (छ.ग.)

पं.रविशंकर शुक्ल विवि रायपुर (छ.ग.)

निष्कर्ष

रतनपुर राज्य की प्रशासनिक व्यवस्थाा प्राचीन हिन्दु राजवंश व्यवस्था पर आधारित थी अर्थात् मनुस्मृति धर्मशास्त्र पुराण पर आधारित था। प्रशासन के सर्वागीण क्षेत्र में इस काल में अत्यधिक विकास हुआ। एक विशेषता भी रही है कि दीर्घावधि तक एक ही राजवंश का शासन एक ही जगह केंद्रित हो ऐसा एक उदाहरण रतनपुर राज्य ही मिलता है यहॉ के राजा कर्तव्य परायण, साहसी, वीरों के आश्रय दाता थे। उन्होंने अपने बाहुबल के माध्यम से राज्य का विस्तार किया। छत्तीसगढ़ की प्रकृति ने राज्य का साथ दिया।

इस अंचल की एक स्वतत्र सामाजिक, सांस्कृतिक अस्मिता का परिचय मिलता है तथापि यह देश अन्य भागों से स्वयं को पृथक नहीं करती बल्कि राष्ट्र की मुख्य सांस्कृतिक धारा के साथ ही प्रवाहित होती है। यही कारण है कि यहॉ देश की अनेक संस्कृतियों को धार्मिक सद्भाव तथा राष्ट्रीय एकता के संस्कार परंपरा से प्राप्त हुए यहॉ की प्रशासनिक परंपरा गौरवशाली रही है। कलचुरी कालीन रतनपुर की प्रशासलिक व्यवस्था समुन्नत थी।

रतनपुर राज्य का जनजीवन एवं शासन सूत्र यद्यपि छोटी–छोटी इकाईयों में विभक्त है परंतु उनकी धार्मिक गतिविधियॉ भिन्न–भिन्न धाराओं में रहते हुए भी निबोध रूप से संचालित होती है। अतः रतनपुर राज्य की धार्मिक स्थिति स्पष्ट एवं उदार है। दक्षिण कोशल मे कला एवं स्थापत्य कला की विकास की दृष्टि से रतनपुर का स्थान महत्वपूर्ण है।

यहॉ की मूर्तिकला, स्थापत्य कला एवं लोक चित्रकला, सांस्कृतिक परंपराओं से अनुप्रेरित है। कालांतर में प्रकृति चित्रण भी विशिष्ट रूप से मिलता है। यहॉ महामाया मंदिर, कण्ठी देवल, रामटेकरी मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहॉ की मूर्तियो मे लिंगोद्भव महेश्वर मूर्ति, कल्याण सुन्दर प्रतिमा, शालभंजिका का अंकन, रावण की सिरोपासना इसके साथ ही ब्रम्हा, विष्णु, नवग्रहों एवं शिव की ताण्डवनृत्य प्रतिमा महत्वपूर्ण है। रतनपुर में वैदिक युग, मौर्य, सातवाहन, गुप्त, मराठा एवं आंग्लयुगीन ऐतिहासिक अवशेष मिलते है। ये अपने बेशुमार सरोवरों के लिए प्रसिद्ध है यद्यपि आज इसे संरक्षण की जरूरत है।

यद्यपि यहॉ 6वी शताब्दी ईस्वी 18वी शताब्दी ईस्वी तक कलचुरी राजाओं ने दक्षिण कौशल के अनेक स्थानों पर शासन किया, जिसके साक्ष्य हमे इन क्षेत्रों से प्राप्त होते है जो पुराविदो और छात्रो को आकर्षित करते है।

रामटेकरी मंदिर

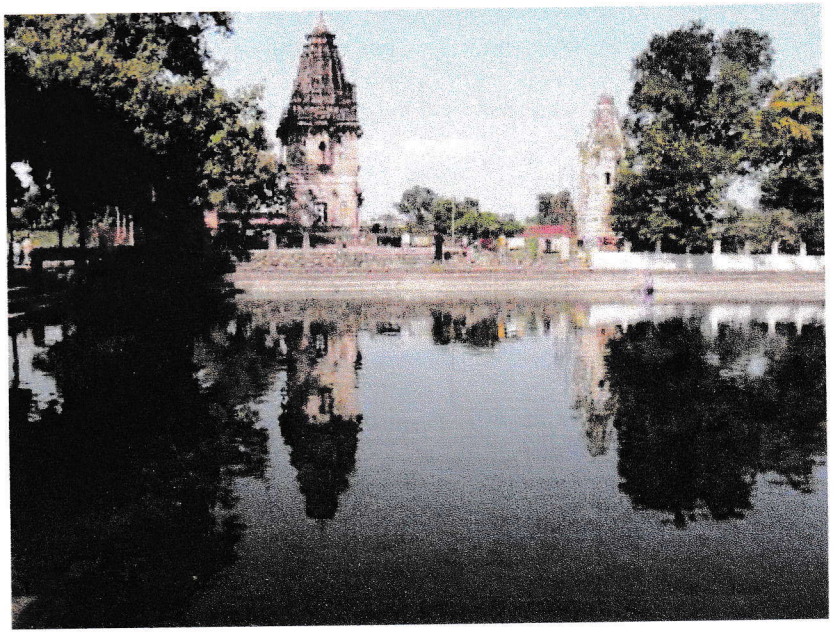

कंठी देवल मंदिर, रतनपुर

पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर छ.ग.

विभाग – प्राचिन इतिहास संस्कृति एवं पुरात्तव

विषय – सर्वे एण्ड फिल्ड रिर्पोट (तालागांव)

प्रस्तुत कर्ता
वैभव शर्मा

निर्देशक
डॉ. दिनेश नन्दिनी परिहार
HEAD
Ancient Indian History Culture
& Archaeology
Pt. Ravishankar Shukla University
RAIPUR (C.G.)

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ का इतिहास 10000 वर्षों से ज्यादा पुराना है पुरात्तवविदो ने यहाँ मानव सभ्यता का पता लगाया है तालागांव मनयारी नदी के तट पर बसा एक अनुठा इतिहसीक स्थल है यहा की कला आकृतिया एवं स्थापत्य छत्तीसगढ़ की पुरातान सभ्यता की समृध्दि का का वर्णन करता है ।

देवरानी मंदिर से प्राप्त रूद्रशिव प्रतिमा एक अनुठी अनुकृति है जिसे पशु पक्षि एवं मानव के धड से निर्मित किया गया है इसके मंदिरों के पुरातान शिल्प कला का अदभुत उदाहरण पत्थरों के नक्काशी किया गया है। इसमें गर्भगृह एवं मडप उपस्थीत है मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार चारों ओर से बड़े स्तम्भों से घिरा हुआ है। इन स्तम्भों में हिन्दु देवी देवताओं पशुओं एवं पोराणीक आकृतिओं का इत्यादि का अंकन किया गया है

जेठानी मंदिर देवरानी मंदिर के तुलना में अत्यधिक क्षतिग्रस्त है । जेठानी मदिर में गर्भगृह एवं मंदिर के प्रवेश द्वार चारों ओर से बड़े एवं मोटे स्तंभों से घिरा हुआ है इन स्तंम्भों में यष्ठिया बिखरी हुई है। स्तम्भों में कालात्मक प्रतिकों का अंकन किया गया है। स्तम्भों के उत्तरी भाग में कुम्भ आमलक घट पर आधारित है। जो कि किर्ति मुख से निकली हुई लतावल्वरी से अलंकृत है मंदिर के उपरी शिखर भाग का कोई प्रमाण प्राप्त नहीं है

निस्देह रूप से छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिला के निकट बसी तालांगांव जो कि शिवनाथ नदी के सहायाक नदी के तट पर बसी है ताला में स्थीत पुरातान स्मारको एवं मंदिरों के अवशेष भारतीय स्थापत्य कला का विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

देवरानी जेठानी मंदिर तालागांव

A

Project Report

On

Hospitality & Public Health - Indian Railway. Catering and Tourism Corporation (IRCTC)

Submitted in the partial fulfillment of

post graduate Diploma in

Tourism and hotel management

P.G.D.T.H.M Examination

2021-2022

Guidance by

Dr Shyam narayan singh

Contract Lecturer

Institute of torism and Hotel Menegement

Director:

Dr Dinesh Nandani

Director
Institute of Tourism & Hotel Management
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.) 492010

Institute of tourism and

Submitted By

Taufik Ahmed

P.G.T.H.M

Pt. Ravishankar Shukla University

Raipur Chhattisgarh

Chapter= 9

FOOD SAFETY AS VEHICLE OF PUBLIC HEALTH

DISCUSSION & PREDICTIONS

IRCTC played a significant role in the growth of our economy since its inception. Though started in 2001 , as an extended arm of Indian Railways , focusing on passenger oriented hospitality services , expanding its operation in Tourism , Internet ticketing, Non railway catering, Retailing, Rail Neer & so on .The management & supervision of catering services was handed over to IRCTC in 2005 and as per Catering Policy 2010 except for food plaza, fast food unit , food courts & certain departmental catering units, all other catering activities have been transferred back to Railways. Now IRCTC regrouped itself to foray Rail Neer, Non railway catering, targeting educational intuitions, hospitals, government offices such as PMO & Rail bhavan.

n 2008, IRCTC Recruited around 3000 peoples from various IHM & Food crafts institutes as cooks waiters and supervisors to deliver professionalized catering services. Since Indian Railways being one of the largest network in the world carrying more than 13million every day, food services always remains the challenging task. Through its commitment towards serving hygienic food at affordable price, the corporation has been credited for bring out radical change in the food service operation across its network. Some of the challenges faced by them were the difficulty in predicting the quantity of food required, profile of the travelers, their destination, since the chart was prepared only four hours before the departure time.

A

Project Report

On

Travel Motivators Work Process

and Trend for Promoting Leh-Ladakh

in

Tourism and Hotel Management

2020-2021

Under Guidance of:

D. Nandini 23/7/21

(Dr. Dinesh Nandini Parihar)

Director
Institute of Tourism & Hotel Management
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.) 492010

Director

Institute of Tourism and

Hotel Management

Submitted By:

(Diksha Bajaj)

Institute of Tourism and Hotel Management

Pt. Ravishankar Shulka University, Raipur (C.G.)

- Raise sensitivity to host countries' political, environmental, and social climate.

Conclusions:

The preceding chapters have demonstrated how a management plan for Leh has be structured and which main components it needs to contain, in order to address the major issues currently facing the town as named by the local government and further identified in chapter 4. Considerations of implementation have been satisfied by a discussion of expected results and limitations of urban management activities. Implementation should ideally be based on an action plan, which has been discussed under considerations of finances and practicality. The existence of a driving force has been identified as a key element. Finally, the urgent need for developing and implementing a management plan has been demonstrated by contrasting different development scenarios for the next 5-10 years.

Funding and political commitment for such projects made available), management of Leh organized along the lines described above would in fact create an important example of people-centred urban conservation in Asia. Such an outcome particularly depends on whether the dynamism of recent positive developments can be upheld. Thanks in part to modest scale of the town, the open and democratic local political system, the emergence of actors and interest constellations that have begun to tackle vital local problems and all the other considerations described in the preceding chapters, the prospects of making Leh a positive experience in integrated urban conservation and development against the odds are quite good.

If we superimpose the Leh District demography curve we can state that the tourism industry in the District has already passed through the "Exploration" phase and has progressed to the "Development Involvement" but any indications can be extrapolated from the available data regarding the duration of each phase and the time of the changes. So it is necessary to handle with care existing data and the consequent interpretation as false projections would be similar to reading a misleading crystal ball.
Correct analysis on available statistical annual data on tourism traffic volume shows that Tourism System in Leh District is "complex and non-linear". The system conveys a "non resilient" market dependent from several factors or different issues, not under local control, that can occur at unpredictable time and determine the "growth" or the "fall" of the annual tourist inflow.
Moreover policy makers, administrators and planners sometimes attempt to gloss over important data and events, in order to promote a simple linear vision of the development of the area. Cautiously scaling up tourist arrivals, to contribute to the economic and social well being of the people of this district, is a big challenge because heavy economic and monetary dependence on only one, although promising, sector can be problematic for the sustainability of the local development process.
Therefore there is a need for a future scientific/practical assessment, supported by

statistical analysis, on the "quantity and quality" of tourism industry that Ladakh can handle without getting into the social and environmental problems that many other tourist destinations in India have experienced.

Chinkara Journeys

To whom it may concern

16.07.20

This is to certify that Ms. **Nehal Adhya Lodha** has completed her one month of internship as customer relation intern in our organization from 15.06.20 to 15.07.20. She has been sincere with her work and completed the role assigned to her efficiently.

We wish her all the best for her future endeavours.

Best regards,

Saurabh Agrawal
(Chief Executive)

Chinkara Journeys, I-2 Anupam Nagar, Masjid road, Raipur (Chhattisgarh) 492001, INDIA
Tel: +91 982 666 9090 Email: info@chinkarajourneys.com Web: www.chinkarajourneys.com

A

Project Report

On

"MOLECULAR GASTRONOMY – FUTURE ASPECTS OF RESTAURENTS"

Submitted in the Partial Fulfillment of

Post Graduation Diploma in Tourism & Hotel Management

2020-21

Director: D. Nandini 23/7/21

Dr. Dinesh Nandini Parihar

Institute of Tourism & Hotel Management

Director
Institute of Tourism & Hotel Management
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.) 492010

~~Guided By :~~

~~Dr. Shyam Narayan Singh~~

~~Assistant Professor(Contractor)~~

Submitted By

Nehal Adhya Lodha

Institute of Tourism and Hotel Management

Pt. Ravishankar Shukla University

Raipur (C.G)

CREATE
BONDS
WITH
US

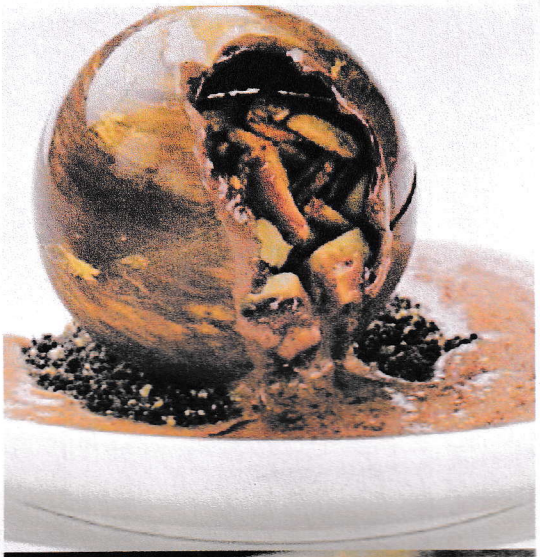

GOOD

FOOD

CONCLUSION

Molecular gastronomy is a new gourmet direction connecting the catering kitchen and laboratory, and thus creates new flavors, forms of unprecedented. It can be, of course, understood as a process of application of science in everyday cooking. Methods and means for obtaining the final products in the molecular gastronomy request the knowledge of the chemical and physical processes. Of course, the introduction of molecular gastronomy requests, too, and some modifications in the approach to guests, number of courses of which every dish is extremely small - the art on a plate, losing the concept of menus and menu, while the duration of a meal takes several times longer. Certainly, this approach also affects the habits of the people towards healthy eating, where it is no longer considered to be a meal consumed in a shorter time, but the opposite, and making sure the food is consumed, and thus affects the reduction of today's problems related to overweight-obese population. Modern molecular gastronomy shows the tendency toward further progress and popularization, but a noticeable impact on the so-called "Molecular mixology", and molecular approach to the preparation of cocktails, where just as in the case of food, it is changing the physical state of food and it is searching the limits of each food. The future is unpredictable, and in which direction to go to molecular gastronomy remains to be seen.

पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ,रायपुर (छ.ग.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुमारी लीना सिंह ठाकुर ने पर्यटन एवं होटल प्रबंधन मे स्नतकोत्तर पत्रोपाधि परीक्षा 2020–21 की अंशपूर्ति हेतु बस्तर बस्तर पर्यटन एवं आदिवासी कला संस्कृति विषय पर कार्य किया है। प्रस्तुत परियोजना प्रतिवेदन कुमारी लीना सिंह ठाकुर के द्वारा संकलित तथ्यों के विश्लेषण पर आधारित है।

दिनांक :–

स्थान :–

23/7/21

(डॉ. दिनेश नंदिनी परिहार)
डायरेक्टर
पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान
पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर

Director
Institute of Tourism & Hotel Management
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.) 492010

6. निष्कर्ष एवं सुझाव :

इस क्षेत्र की विशालता, विभिन्न जनजातियां और उनके अलग-अलग सांस्कृतिक रीति-रिवाज, घने दुर्गम्य जंगल और प्राचीन अवशेषों की बहुलता सभ्यताओं का एक बहुरूपदर्शी चित्र प्रस्तुत करती है, जिससे हजारों साल पुरानी आदिम संस्कृतियों की झलक दिखाई पड़ती है। बस्तर का स्वरूप वास्तव में एक फिल्मग्रंथन (मोन्टेज) जैसा ही है, वहां सड़कों के किनारे हाथों में चमकते लोहे की हंडियों में ताड़ी बेचने वाले दिखते हैं। मछली की पूंछ में मौजूद तेल से बनाया गया सुल्फी और महुआ लोगों का मनपसंद पेय है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा हाल ही में एक शिल्पग्राम की स्थापना की गई ताकि इस क्षेत्र की जनजातीय कला और हस्तशिल्पों को अक्षुष्ण रखा जा सके और उसे बढ़ावा दिया जा सके।

बस्तर छत्तीसगढ़ प्रान्त का एक जिला है। ख़ूबसूरत जंगलों और आदिवासी संस्कृति में रंगा ज़िला बस्तर, प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी के तौर पर जाना जाता है। 39114 वर्ग किलोमीटर में फैला ये ज़िला एक समय केरल जैसे राज्य और बेल्जियम, इज़राइल जैसे देशो से बड़ा था। ज़िले का संचालन व्यवस्थित रूप से हो सके इसके लिए 1998 में इसमें से दो अलग ज़िले कांकेर और दंतेवाड़ा बनाए गए। बस्तर का ज़िला मुख्यालय जगदलपुर, राजधानी रायपुर से 305 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ज़िले की करीब 70 प्रतिशत आबादी गौंड, मारिया-मुरिया, ध्रुव और हलबा जाति की है। उड़ीसा से शुरू होकर बीजापुर की भद्रकाली नदी में समाहित होने वाली करीब 290 किलोमीटर लंबी इंद्रावती नदी बस्तर के लोगों के लिए आस्था और भक्ति की प्रतीक है। इंद्रावती नदी के मुहाने पर बसा जगदलपुर एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं हस्तशिल्प केन्द्र है। यहां मौजूद मानव विज्ञान संग्रहालय में बस्तर के आदिवासियों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं मनोरंजन से संबंधित वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। डांसिंग कैक्टस कला केन्द्र, बस्तर के विख्यात कला संसार की अनुपम भेंट है। यहां एक प्रशिक्षण संस्थान भी है। पर्यटन स्थल -

बस्तर महल, दलपत सागर, चित्रकोट जलप्रपात, तीरथगढ़ जलप्रपात, कुटुमसर और [[कैलाश गुफा],और एक ग्रिन गुफा मिला है।

कोरोनाकाल में हम जीवन को नए तरीके से ढाल रहे हैं। इसे न्यू नॉर्मल फेज भी कहा जाता है। चूंकि इस समय परिवार के साथ लंबी दूरी नहीं तय की जा सकती है, आने वाले दिनों में इन्हें टूरिज्म का न्यू नॉर्मल स्पॉट भी कहा जा सकता है।

बस्तर में कई ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जो आज भी अनछुए हैं। हालांकि अभी तक लोग सिर्फ चित्रकोट और तीरथगढ़ को ही जलप्रपात के लिए जानते हैं। इनके अलावा और भी कई जगह है। जहां लोगों के लिए नई है। इन्हीं में से एक झूलना दरहा जलप्रपात है। तीरथगढ़ गांव के लिए जाने से पहले बने मोटेल के पीछे से करीब 500 मीटर की दूरी पर बहने वाले नाले से होते हुए करीब 400 मीटर दूर झूलना दरहा स्थित है। यहां मनोरम जलप्रपात है जो करीब 20 फीट ऊंचा है लेकिन देखने में खूबसूरत है।

- **सुझाव**

घरेलू पर्यटन पर बल देने हेतु स्कूली छात्रों को देश के विभिन्न भागों में भेजना अनिवार्य किया जाना चाहिये। इसे स्कूल पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिये। होटल उद्योग के सामने आने वाली समस्याओं और देश भर में पर्यटन के विकास में बाधा बन रही कनेक्टिविटी के बुनियादी ढाँचे की कमी पर चर्चा पर धयान देना चाहिये ।

सेवा प्रदाताओं के लिये क्षमता निर्माण द्वारा मानव संसाधन प्रबंधन और आतिथ्य शिक्षा का आधार व्यापक बनाकर पर्यटन स्थलों तक आसानी से पहुँच प्रदान करना तथा इसके लिये अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और सुविधाएँ बहाल करना मंत्रालय के लिये चिंता का प्रमुख विषय होना चाहिये ।

पर्यटन मंत्रालय, पर्यटन स्थलों को विश्व स्तर के अनुरूप तैयार करने के लिये समग्र विकास को प्राथमिकता । इसके लिये अन्य केंद्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों और उद्योग के साझेदारों के

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,रायपुर(छ.ग.)

विषय- विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी सोच में कोविड-19 का प्रभाव

एम.एस.सीचतुर्थ सेमेस्टरहेतु प्रस्तुत

सत्र : 2020-21

शोध निर्देशक

डॉ. शैलेंद्र कुमार वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर

शोधार्थी

आकाश सोनी

एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टरमानवविज्ञान

मानवविज्ञान अध्ययनशाला,

पं.रविशंकरशुक्लविश्वविघालय , रायपुर (छ.ग.)

प्रमाण - प्रत्र

प्रमाणितकियाजाताहैकिआकाशकुमारसोनी (चतुर्थ सेमेस्टर)द्वितीय-वर्ष , विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगारमेंशोध - प्रतिवेदनतृतीयप्रश्न-पत्रकेलिए "**विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी सोच में कोविड-19 का प्रभाव**"विषयपरप्रस्तुतकियागयाहै।

यहप्रतिवेदनउनकेद्वारासंग्रहितकियेगयेतथ्योंपरआधारितहै।

स्थानःरायपुर

दिनांक : 04 /10 / 2020

प्रो. अशोक कुमार प्रधान

(प्रोफेसरएवंविभागाध्यक्ष)

मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं.रविशकरशुक्लविष्वविधालय ,

रायपुर . (छ.ग.)

मानवविज्ञान अध्ययनशाला,

पं.रविशंकरशुक्लविश्वविघालय , रायपुर (छ.ग.)

प्रमाण - प्रत्र

प्रमाणितकियाजाताहैकिआकाशकुमारसोनी (चतुर्थ सेमेस्टर)द्वितीय-वर्ष , विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगारमेंशोध - प्रतिवेदनपंचमप्रश्न - पत्रकेलिए"**विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी सोच में कोविड-19 का प्रभाव**"विषयपरप्रस्तुतकियागयाहै।

यहप्रतिवेदनउनकेद्वारासंग्रहितकियेगयेतथ्योंपरआधारितहै।

स्थानःरायपुर
दिनांक : 04 /10 / 2021

डॉ. शैलेंद्र कुमार वर्मा
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं.रविशकरशुक्लविष्वविधालय , रायपुर .

मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं.रविशंकरशुक्लविश्वविघालय , रायपुर (छ.ग.)

धोषणा - पत्र

मैंआकाशसोनी घोषणाकरताहूँकि "**विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी सोच में कोविड-19 का प्रभाव**"विषयपरप्रस्तुतमेरायहक्षेत्रकार्यप्रतिवेदनचतुर्थ सेमेस्टरकेतृतीयप्रश्नपत्रहेतुस्वयंकेप्रमाणकाप्रतिफलहै।यहमेरामौलिकप्रयासहै , जिसेमैंने (श्री)डॉ . शैलेंद्र कुमार वर्मा(असिस्टेंट प्रोफेसर), मानवविज्ञान अध्ययनशाला,पं.रविशंकरशुक्लविश्वविघालय , रायपुर (छ.ग.) केनिर्देषनमेंपूर्णकियाहै।

स्थानःरायपुर

दिनांक : 04/10 / 2021

आकाशसोनी

(एम.एस.सीचतुर्थ सेमेस्टर)मानवविज्ञान अध्ययनशालापं.रविशकरशुक्ल विष्वविद्यालय , रायपुर (छ.ग.)

निष्कर्ष

- प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी सोच में कोविड-19 के प्रभाव के संबंध में किया गया है अध्ययन समूह के संपूर्ण अध्ययन से विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधित सोच के संदर्भ में यह निष्कर्ष निकलता है कि
- 1.अधिकतम सूचनादाताओं की आयु 22 से 25 वर्ष के बीच तथा न्यूनतम सूचना दाताओं की आयु 30 से 40 वर्ष के बीच है। अधिकतम सूचनादाताओं में महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। अधिकतम सूचनादाता अन्य पिछड़ा वर्ग के पाए गए तथा सबसे कम सूचनादाता अनुसूचित जनजाति के पाए गए। प्रयुक्त अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकतम सूचनादाता विद्यार्थी तथा सबसे कम उत्तरदाता नौकरी और अन्य व्यवसाय करने वाले लोग थे। अध्ययन से यह पाया गया कि 100% अविवाहित उत्तरदाता है । 2. उज्जैन में यह पाया गया कि सूचनादाता के परिवार के सदस्यों में सबसे अधिक इनका 51 से 70 वर्ष के लोग है तथा सबसे कम 0 से 15 वर्ष के लोग हैं जो कि एक नकारात्मक प्रभाव है क्योंकि युवाओं की अपेक्षा परिवार में वृद्धों की संख्या अधिक है। परिवारिक सदस्यों मे सबसे अधिक माता के रिश्ते को देखा गया है तथा सबसे कम पुत्र पुत्री के रिश्ते पाए गए। अध्ययन से सूचना दाताओं की परिवार में सबसे अधिक विद्यालय तक शिक्षा प्राप्त करने वाले सदस्य पाए गए तथा सबसे कम अशिक्षित सदस्य पाए गए जो कि सकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं। सूचनादाताओं के परिवार में सबसे अधिक विवाहित सदस्य पाए गए तथा सबसे कम विधवा सदस्य की पुष्टि हुई। सूचनादाताओं की पैरवी सबसे अधिक विद्यार्थी तथा सबसे कम मजदूर कार्य करने वाले की पुष्टि हुई ,जो सकारात्मक प्रभाव को दर्शाती है। अध्ययन समूह में सबसे अधिक 10000 से 50,000 रुपए मासिक आय वाले परिवार देखे गए तथा सबसे कम 150000 से अधिक आय वाले परिवारों की पुष्टि होती है जो कि एक सकारात्मक प्रभाव

अर्थव्यवस्था को दर्शाती है। अध्ययन से सबसे अधिक प्रतिशत पक्के घर की पुष्टि , 64.55 प्रतिशत सूचनादाताओं के पास अलग कमरे की स्थिति , 87.34% सूचनादाताओं के घर में मोबाइल , टेलिविजन, इंटरनेट, बाइक, कार तथा अन्य संसाधन की पुष्टि करती है जो उनके आर्थिक स्थिति में सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करती है। 62.02 प्रतिशत उत्तरदाता आबादी वाले क्षेत्र में निवासरत पाए गए जो कि उनकी सामाजिक और विकास ही स्थिति में सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं। 3. कोविड-19 ने विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधित विचार पर कुछ सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव को देखा जा सकता है। परंतु सकारात्मक प्रभाव की अपेक्षा नकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ा।विद्यार्थियों को उनके उच्च शिक्षा संबंधित विचारों और रोजगार संबंधित विचारों में कुछ नकारात्मक प्रभाव जैसे कि 88.60 प्रतिशत लोगों को उच्च शिक्षा में परेशानी का सामना करना पड़ा , 45.57% लोगों के रोजगार संबंधी लक्ष्य परिवर्तन , 50.63% लोगों में उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृति में परिवर्तन की भावना उत्पन्न हुई , उच्च शिक्षा ग्रहण करते समय 60.76% लोग रोजगार के लिए प्रयासरत थी किंतु उच्च शिक्षा ग्रहण करते समय केवल 29.12% लोग रोजगार कार्य किया करते थे , केवल रोजगार प्राप्त कर रहे लोगों की रोजगार स्थिति में 33.30% रोजगार सामान्य रूप से चलता रहा बाकी 66.70% रोजगार पर नकारात्मक प्रभाव देखा गया, लोगों के मन में पढ़ाई के प्रति रुचि रुचि नहीं रही , कोविड-19 के कारण 50.65 प्रतिशत लोगों में रोजगार के प्रति रुचि नहीं रही यार ऊंची में परिवर्तन हो गए , 35.06 % रोजगार कर रहे लोगों कि रोजगार में परिवर्तन हुआ, 53.50% लोगों के प्रायोगिक कार्य नहीं हुए , प्रायोगिक कार्य नहीं होने के कारण 68.75 प्रतिशत लोगों में अपने विषय की शिक्षा के प्रति रुचि में कमी आई, प्रायोगिक कार्य नहीं होने के कारण 63.7 5% लोगों को लगता है कि इसका उनके रोजगार पर प्रभाव पड़ेगा, 69.62% लोगों को जॉब वैकेंसी में कमी दिखाई थी जिसकी आवृति सबसे अधिक 20% जॉब

वैकेंसी में कमी की थी , कोविड-19 के कारण 72.15% लोगों की आय में कमी आई, रोजगार कर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे लोगों में 38.29 प्रतिशत लोगों को जॉब से निकालने की स्थिति उत्पन्न हुई , 68.35% लोगों को शिक्षा संसाधन में कमी हुई , जिन उत्तरदाताओं के विषय के प्रश्न पत्र में क्षेत्रकार्य /शैक्षणिक भ्रमण/औद्योगिक क्षेत्र भ्रमण/ ट्रेनिंग या अन्य कार्य थे उनमें से 48.14 % उत्तरदाताओं के यह कार्य नहीं हुए जिससे 81.94 % उत्तरदाताओं कोक्षेत्रकार्य /शैक्षणिक भ्रमण/औद्योगिक क्षेत्र भ्रमण/ ट्रेनिंग या अन्य कार्य लगता है कि उनके रोजगार पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा इसके साथ ही यह सभी कार्य नहीं होने के कारण लोगों को उच्च शिक्षा में गिरावट हुई है। ऐसे नकारात्मक विचार विद्यार्थियों के भविष्य पर बहुत बुरा प्रभाव डाल सकते हैं। वही सकारात्मक प्रभाव में कोविड- 19 के कारण विद्यार्थियों को प्रायोगिक सिद्धांत विषयों में अधिक अंक प्राप्त हुए हैं जो कि उनके अनुसार भविष्य में उनके रोजगार के लिए लाभदाई होंगी 65.28% लोगों को ऑफलाइन परीक्षा से ऑनलाइन परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त हुए हैं जिन की आवृत्ति सबसे अधिक 10 से 20 अंक की बढ़ोतरी वालों की है। इसके साथ ही डिजिटाइजेशन में वृद्धि , सामाजिक संबंधों में सुधार जैसे कुछ अन्य सकारात्मक प्रभाव को भी दिखा जा सकता है।

A Retrospective Observational Study on Postchemotherapy Survival of HER2-Positive Breast Cancer Patients

A THESIS

Submission Fulfilment of the Requirements
for the Degree of

Master of science in Anthropology

At

Pt. Ravishankar Shukla Vishwavidyalaya, Raipur
c.g.

By
Nishu kasar

Guide
Ass. Prof. Dr. Shailendra Kumar verma

CERTIFICATE

This is to certify that the investigations described in this thesis entitled ***"A retrospective observational study on post-chemotherapy survival of Her-2 positive breast cancer patients"*** has been submitted in the partial fulfilment of the requirements for the degree of **Master of science in Antrhopology** at Pt. Ravishankar Shukla university Raipur, under the guidance of **Dr. Shailendra Kumar verma** Assitant Professor, Pt. Ravishankar Shukla university, Raipur c.g.

Dr Shailendra Kumar verma Assistant professor School of studies in Anthropology Pt. Ravishankar Shukla university Raipur (C.G.)	Head of department – **Dr. Ashok Kumar Pradhan** **Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur** **Chhattisgarh**

DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled ***"A retrospective observational study on post-chemotherapy survival of Her-2 positive breast cancer patients"*** has been prepared by me and, submitted in the partial fulfilment of the requirements for the degree of MASTER OF SCIENCE IN ANTHROPOLOGY

Nishu kasar
Roll No.: 1910180013
Enrolment No.:AE/00602

Conclusion

The results presented in this study encouraging pertaining to the prognosis and treatment of Her-2 positive breast cancer in Chhattisgarh. Our results add to the growing body of evidence pertaining to the association of certain demographic and clinic-pathologic characteristics in women with breast cancer. The observation we have reported provide potential implications in the clinical management of Her-2 positive breast cancer. However, extensive research and development of advanced treatment modalities are highly essential to provide better understandings of the disease and to develop highly efficacious therapies.

In the present study, BMI were found to be significant risk factors. These are modifiable factors. Hence, women should be encouraged to take care of all these factors to decrease their risk of breast cancer.

Public awareness of this fatal disease must be developed; it helps in detection of breast cancer in early stages. If cancer is detected in early stages, it is curable.

Considering the low awareness levels of the participants and nonexistent screening practices, a targeted intervention to tackle this problem seems to be the need of the hour.

कोविड-19 महामारी के पूर्व व पश्चात् हुए स्वास्थ्य तथा पोषण स्तर में परिवर्तन का अध्ययन

(छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले समेत कुछ अन्य जिलों में कोविड-19 महामारी के पूर्व व् पश्चात के प्रभाव के सन्दर्भ में)

लघु शोध प्रबंध

सत्र – 2020-2021

एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

लघु शोध प्रबंध निर्देशक

डॉ. शैलेन्द्र कुमार वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर

छात्रा

प्रिया यदु

एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यलय रायपुर (छ. ग.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रिया यदु मानवविज्ञान अध्ययनशाला में चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा है, यह कार्य चतुर्थ सेमेस्टर के लघु शोध प्रबंध के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले समेत कुछ अन्य जिलों में "कोविड-19 महामारी के पूर्व व पश्चात् हुए स्वास्थ्य तथा पोषण स्तर में परिवर्तन का अध्ययन" विषय पर लघु शोध प्रपत्र पूर्ण किया गया है |

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत लघु शोध प्रपत्र उनके स्वयं के द्वारा संग्रहित किए गए तथ्यों पर निर्धारित है |

डॉ. अशोक प्रधान

अध्यक्ष

मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ. ग.)

घोषणा पत्र

मैं छात्रा प्रिया यदु एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर "कोविड-19 महामारी के पूर्व व पश्चात् हुए स्वास्थ्य तथा पोषण स्तर में परिवर्तन का अध्ययन" विषय पर प्रस्तुत मेरा यह लघु शोध प्रपत्र "लघु शोध प्रबंध" के लिए स्वयं के प्रयासों का प्रतिफल है | मेरा यह मौलिक प्रयास जिसे असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शैलेन्द्र कुमार वर्मा मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) के निर्देशन में किया गया है |

छात्रा

प्रिया यदु

एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

स्थान - रायपुर

दिनांक – 04.10.2021

निष्कर्ष एवं सुझाव -

निष्कर्ष:- कोरोना महामारी वैश्विक स्तर पर फैली एक बीमारी है , जिसने बेहद तीव्रता से पूरे विश्व को अपने चपेट में लिया है | मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को इसने गंभीरता से प्रभावित किया है | किसी भी बीमारी से संक्रमित होने के उपरांत इसका दिनचर्या , स्वास्थ्य और पोषण स्थिति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है | शारीरिक कमज़ोरी, थकान और अन्य शारीरिक और मानसिक परेशानियों का कहीं न कहीं इनसे सीधा संबंध है | कोरोना महामारी से संक्रमित व्यक्तियों में बीमारी के दौरान व बीमारी के उपरांत शारीरिक कमज़ोरी , घबराहट, सिरदर्द, थकान की कई स्थितियां देखी जा रही है | इस महामारी के संक्रमण से बचने हेतु प्रतिरक्षाप्रणाली का मज़बूत होना बेहद आवश्यक है इसके लिए विटामिन सी युक्त पदार्थों का सेवन सबसे सार्थक चरण है | तेज़ी सी बढ़ते इसके प्रकोप ने मानव स्वास्थ्य के लिए कई चुनौतियाँ खड़े किये हैं , खानपान दिनचर्या प्रभावित होना भी मानसिक स्वास्थ्य को आघात पहुँचता है | अतः ऐसी परिस्थितियों में सकारात्मक सोच और जीवनशैली को बेहतर बनाना बेहद आवश्यक है |

इस महामारी ने न केवल स्वास्थ्य को बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्तर को भी उतनी ही गंभीरता से प्रभावित किया है | आर्थिक स्थिति गड़बड़ाने का सीधा सीधा प्रभाव स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति पर पड़ता है | अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छा पोषण बहुत मायने रखता है और अच्छे पोषण के लिए अच्छा आहार और अच्छी जीवनशैली दोनों महत्वपूर्ण है | अतः कोरोना महामारी से ठीक होने के पश्चात् खानपान और जीवनशैली दोनों का ध्यान रखना आवश्यक है |

सुझाव : - उपरोक्त निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि कोरोना महामारी ने न केवल स्वास्थ्य बल्कि पोषण और जीवनचर्या को भी प्रभावित किया है | कोरोना महामारी के पूर्व व पश्चात् के प्रभाव का उचित प्रबंधन करना बेहद आवश्यक है जिससे कि इसका कोई अन्य नकारात्मक प्रभाव न पड़े |

- अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छा खानपान का ध्यान रखा जाना चाहिए, इस महामारी के दौरान और ठीक होने बाद पोषक तत्त्व और संतुलित आहार को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए ताकि शारीरिक कमज़ोरी , थकान आदि से राहत मिल सकें |
- खाना-पान के साथ-साथ कुछ शारीरिक गतिविधियां भी स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में अहम योगदान देते हैं | जैसे व्यायाम, योगाभ्यास, सुबह की सैर आदि को भी दिनचर्या में शामिल किया जाना चाहिए |
- सकात्मक विचार और मानसिक रूप से मजबूती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए |

Impact Of Covid-19 On Sexual Health, Mental Health And Eating Habits Among The Muslim People Of Chhattisgarh

Fieldwork Report
For
The Partial Fulfillment of M.A./ M.Sc.
IV Semester Examination

DISSERTATION/ PROJECT WORK

SUPERVISOR

Dr. Ashok Kumar Pradhan
Head Of The Department
School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
• Raipur (C.G.)

SUBMITTED BY

Sakeena Fatima
M.Sc. Anthropology
(IV Semester)

SCHOOL OF STUDIES IN ANTROPOLOGY
PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY
RAIPUR, CHHATTISGARH
2021

School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.)

Certificate

It is certified that the field work report entitled **"Impact Of Covid-19 On Sexual Health, Mental Health And Eating Habits Among The Muslim People Of Chhattisgarh"** is being submitted by **SAKEENA FATIMA** student of M.Sc.IV Semester Anthropology as a partial fulfillment of the requirement of Dissertation/ Project Work.

Examination (2020-2021).

Raipur

Date- .09.2021
30.

Dr. Ashok Kumar Pradhan
Head Of The Department
School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
• Raipur (C.G.)

Declaration

I hereby declare that the field work entitled **"Impact Of Covid-19 On Sexual Health, Mental Health And Eating Habits Among The Muslim People Of Chhattisgarh"** embodies my own work and, submitted for partial fulfillment IVnd Semester Examination, 2021, **Dissertation/ Project Work** in Anthropology. I completed this report under supervision of **Dr.Ashok Kumar Pradhan,** Head Of The Department, School of Studies in Anthropology, Pt. RavishankarShukla University, Raipur(C.G.)

Raipur
Date : .09.2021
30.

Sakeena Fatima

M.Sc. Anthropolog
(IV Sem.)
School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.)

summary and conclusion

- According to above 42.42% of peoples are feel weakness after doing sex before covid-19 and after getting infected from this virus the number of people are got increase 4% and its become 46.46%. As per the data we can say after got infected from this virus people sexual health got affected.

- Before covid-19 38.38% of peoples (more of data) are doing intercourse 4 days in a week but after they got infected by covid-19 45.45% if peoples are started doing intercourse everyday and hours of doing intercourse is also got increase as per data its shows the change in peoples sexual life.

- before covid-19 99.99% of peoples are got satisfied by there partner but after covid-19 52.53% of peoples are not got satisfied because there partner got satisfied earlier then them and there need and demand of sex are got increase.

- According to the data more is 39. 43.82 % females are having normal periods 33.7% of females are having irregular periods and 22.47% of females are having more then regular period before covid-19 but According to after covid data more is 64. 71.91% females are having normal periods 16.85% of females are having irregular periods and 11.23% of females are having more then regular period this data is shows number of womens who are having normal cycles are getting increase so we can say that the infection is affected females hormones and menstruation cycle .

- Before covid-19 36.19% are having anger issue out of them 35.35% of people getting angry easily and 45.45% of peoples are having medium level of anger but after covid-19 79.33% are having anger issue which is more then before and out of them 35.35% of people getting angry easily and 45.45% of peoples are having medium level of anger which is same as before.

- some peoples are feeling it's tough to digest spicy food after comparing the data before and after covid-19 we can say that the peoples having some changes in their food behaviour after covid-19.

- According to data 49.58% of peoples are liking spicy food which is more of the data but due to covid all the peoples are stop eating it and after recover the number of people who like spicy food is decrease only 8.26% are liking it and its happened due to digestion issue and its also affected 71.07% of peoples food intake 26.44% peoples food intake are increase 44.62% peoples food intake are decrease and 28.92% peoples food intake are normal so we can say that due to this people eating or food behaviour got affected.

- As per all above data its proof after getting infected from this virus peoples are having and facing issue in their sexual life which is affected on their mental health and the its also increase there sexual demand so for resolving this issue government have to make a policy and appoint a a counselor to common people who discuss their issue and council and guide them to resolve that .

- After getting infected from this virus peoples test buds and digestion got affected due to that peoples are decrease their intake amount of food which is cause weakness in their body and it make them weak so government have to make some policy and distribute some medicines as extra supplements to cover the requirement of body.

- As per above data females hormones get affected and its affected on females most important sexual thing which is menstruation cycle .

The impact of COVID-19 Pandemic on health in people of Chhattisgarh India

Dissertation/Project work

Submitted for the MSc. IV semester
Group – A (Physical Anthropology)
Session: 2019-2021

Research guide
Dr. Ashok Kumar Pradhan
professor , HOD
School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
• Raipur (C.G.)

Researcher
Sushma Sahu
(Student MSc.IV semester)

SCHOOL OF STUDIES IN ANTROPOLOGY
PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY

RAIPUR, CHHATTISGARH
2021

School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.)

Certificate

It is certified that the project work report entitled **"The Impact of COVID-19 Pandemic on health in people of Chhattisgarh India"** is being submitted by **SUSHMA SAHU** student of M.Sc.IV Semester Anthropology as a partial fulfillment of the requirement of lab. Course compulsory dissertation.

Examination (2019-2021).

Raipur
Date:- 04/10/20201

Dr.Ashok Kumar Pradhan
professor, HOD
School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
•Raipur (C.G.)

Declaration

I hereby declare that the field work entitled " **The impact of COVID-19 Pandemic on health in people of Chhattisgarh India**" embodies my own work and, submitted for partial fulfillment IVth Semester Examination, 2021, Lab. Course - Compulsory Fieldwork in Anthropology. I completed this report under supervision of Dr. Ashok Kumar Pradhan, Professor, HOD Of School of Studies in Anthropology, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur(C.G.)

Raipur
Date:-04/10/2021

Sushma Sahu
M.Sc. Anthropolog (IV Sem.)
School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.)

Chapter-10

Result, Conclusions and suggestion

10.1 Result

In this time mostly persons have been facing various problem related to physical health. The total numbers of participants are 50 peoples, in which 7 age group of respondents was mostly (48%) belongs to 20-30 years, male (53%), female (47%), (50%) of respondents are belongs to OBC, 58% marid, 42% respondents completed on graduation in which 30% students.

In this study show the frequency of symptoms which are similar to corona, in which common physical symptoms are the 90% participants are suffering from fever, 47.9% participants lost 3-5kg of weight, 82% participants have weakened immunity, 90% participants have symptomatic characters happened, participants are reported underweight 44% of BMI level, 58% of respondent has reported that aversion of food, the 38% participant are suffering from the Blood Pressure and 62% suffering weight loss after COVID-19 infection. 58% participants reported that they are suffering from irritation.

In this study show the frequency of people have 24 out of 50 participants. Total percentage of vaccinated respondents are 48% in my study group.

10.2 Conclusion

Due to the corona epidemic, a person's normal daily routine and the sense of physical security are seen to be greatly affected. Due to these changes, changes in physical health are also visible.

Corona epidemic has affected every field, but it has seen a lot of impact on health. The health condition of patients suffering from corona is becoming very serious and the risk of new infection is also increasing in them.

In the short research conducted in Chhattisgarh, I found in this study that physical health has been affected. Corona epidemic has affected every field, but it has seen a lot of impact on health. The health condition of patients suffering from corona is becoming very serious and the risk of new infection is also increasing in them.

Study finds high prevalence of symptoms of physical condition in people of Chhattisgarh during Covid-19 Our

Based on the data obtained from the study, we can say that COVID-19 may be responsible for physical health illness.

The findings of this study suggest that covid-19 has been associated with physical health and mental health such as:

BMI level, Weight loss, blood pressure, weak immunity, irritation. Can affect.

10.3 Suggestion

- Corona vaccine should be administered as soon as possible.
- The physical exercise should be done continuously, because it is good for physical health.
- The mental exercise should be done continuously, because it is good for mental health.
- Healthy nutritious food should be taken in food, for strong immune system.